Patrika,17th Dec 2017, P.13

आईआईएम में व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण

विदेशों में 50 और देश में 32% होता है प्रैक्टिकल

रायपुर ● देश में तकनीकी संस्थान की संख्या बढ़ती जा रही है, लेकिन उनकी गुणवत्ता पर किसी भी प्रकार का चिंतन नहीं हो रहा है। स्टूडेंट्स केवल थ्योरी नॉलेज के साथ अपनी स्टडी कम्पलीट कर रहे हैं। इससे देश में भविष्य में कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

तकनीकी संस्थानों की उत्कृष्टता और गुणवत्ता शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए आईआईएम में पांच दिवसीय तकनीकी शिक्षा सुधार कार्यक्रम टीईक्यूआईपी के तहत वरिष्ठ संकाय सदस्यों के लिए व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें उच्च शैक्षिक संस्थानों के संकाय सदस्यों के लिए , तकनीकी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालने, वर्तमान प्रणाली पर विचार विमर्श किया गया। इस मौके पर इंड्रस्टी और एकडमी के संबंध, रिसर्च एंड डेवलपमेंट एक्टिविटिज, रिसर्च एंड डेवलपमेंट मैनेजमेंट पर देश भर से आए प्रोफेसरों ने चर्चा की। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, जम्मू और कश्मीर, मिजोरम, त्रिपुरा, ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, बिहार और असम राज्यों के इंजीनियरिंग कॉलेजों के प्रोफेसरों, एसोसिएट प्रोफेसरों और सहायक प्रोफेसरों सहित 30 से अधिक प्रतिभागी भाग लिए।

विदेशों में 50 प्रतिशत प्रैक्टिकल : आईआईएम के प्रोफसर डॉ. विनय गोयल ने बताया कि विदेशों की यूनिवर्सिटी में 50प्रतिशत प्रैक्टिकल किया जाता है बल्कि देश में एआईसीटी ने 32प्रतिशत प्रैक्टिकल की अनुमति दे रखी है। इसके साथ ही लेबोटरी और रिसर्च में प्रैक्टिकल के न होने के कारण स्टूडेंट्स का ग्रोथ सही तरह से नहीं हो हो पा रहा है। देश की अपेक्षा विदेशों के रिसर्च ज्यादा पेटेंड हो रहे हैं। इसके लिए हमें अपने संस्थानों में लेबोटरी और प्रैक्टिकल नॉलेज देने पर जोर देने की आवश्यकता है।